बच्चे बाप की याद में बैठे है।यह श्री मत अर्थात श्रेष्ठ ते श्रेष्ट मत मिली है।याद की यात्रा बहुत मीठी है। बच्चे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते है कि जितना बाप को याद करेंगे उतना बाबा स्वीट लगेगा।सेक्रीन है नां।एक बाप ही प्यार करतेहै।बाकी तो सब मार देते है।दुनियां सारी एक दो को ठुकराती है।बाप प्यार करते है।उनको सिर्फ तुम बच्चो ने ही जाना है।बाप कहते है जो मै मै हूं जैसा हूं,मै कितना बड़ा हूं?बतायो हमारा बाप कितना बड़ा है?(बिन्दी)वन्डर है नां।परम पिता परमात्मा पतित पावन तुम्हारा बाप कितना बड़ा है तो कहते है बिन्दी है।और तो कोई जानते नही।बच्चे भी घड़ी2 भूल जाते है।कहते है भक्ति मार्ग मे तो बड़ी2 चीज़ो की पूजा करते थे।अब बिन्दी को कैसे याद करें।बिन्दी,बिन्दी को ही याद करेगी नां। आत्मा जानती है हम बिन्दी है।हमारा बाप भी ऐसे है।आत्मा ही प्रेज़ीडन्ट है नौकर है।[illegible] सारा आत्मा बिन्दी ही बजाती है।बाप है सब से स्वीट।सब याद करते है हे पतित पावन दुख हर्ता सुख कर्ता आयो। अब तुम बच्चो को तो यह निश्चय है।हम जिस को बिन्दीकहते है सूक्षम है।परन्तु महिमा कितनी भारी है। भल महिमा गाते भी है ज्ञान का सागर शान्ति का सागर है परन्तु समझते नही है।कि वो कैसे आकर सुख देते है।मीठे2 चिलड्रेन हरेक समझसकते है कि कितना श्री मत पर चलते है।श्री मत मिलती है सर्विस करने की।बहुत बिमार रोगी है।वेसम है हेलदी भी नही है।भारतवासी जानते है सतयुग में आयु बहुत बड़ी ऐवरेज 125-150 वर्ष थी।हरेक अपनी फुल आयु पूरी करते थे।यह तो बिलकुल ही छी2 दुनिया है।और बाकी थोड़ा समय ही है।मनुष्य बड़ी2 धर्मसालाए आद अभी तक बनातेरहेते है।जानते नही है यह बाकी कितना समय होगे।मन्दिर आद बनाते है लाखोरूपया खर्च करते है इन सब की आयु बाकी कितना समय होगी। तुम बच्चे जानते हो कि यह तो टूटे कि टूटे।तुमको बाबा मकान आद बनाने लिए कब थोड़ई कहते है। तुम अपने ही घर में एक कमरे में हास्पीटल कम युनीवर्सटी बनायो।तुमको मकान आद कुछ बनाने पैसा खर्चने लिए कब नही कहते है।घरमें ही कमरा बना दो।बिगर कोई खर्चा हेलथ वेलथ हैपीनेस 21 जन्मो लिए लेना है।इस नालेज से।यह भी समझाया है तुमको सुख बहुत मिलता है।जब तमो प्रधान बन तब जास्ती दुख होता है।जितना2तमोप्रधान बनते जावेंगे उतना दुख रूप दुनिया होती जावेगी।मनुष्य हिरास में आए बहुत त्राह 2 करेंगे।फिर जै2 कार हो जावेगी।तुम बच्चो ने जो विनाश दिव्य द्रष्टी से देखा है जो फिर पैक्टीकल में देखना है।स्थापना का सा0 भी बहुतो ने किया है।छोटी बच्चियां बहुत सा0 करती है। ज्ञान कुछ भी नही था।पुरानी दुनिया का विनाश भी ज़रूर होना है।तुम बच्चे जानते हो बाप ही आकर स्वर्ग का वर्सा देते है।परन्तु बच्चो को फिर पुरुषार्थ करना है।ऊच पद पानेका।तुम जानते हो 8-10 वर्ष में यह सब मिटी में मिल जावेगे।अभी भीड़ पड़ी है करज़दारो की।करज़ा बहुत भारी है।डरते भी है।समझते है कितना पैसा दियस।लड़ाई में ही सब खलास कर दिया।फिर यह हमको मिलेगा कब।ऐसे2 ख्याल वो लोग करते है।तुम बच्चो को बाप बैठ यह सब बाते समझाते है।वो थोड़ई जानते हैकि बाकी थोड़ा समय है।बाप कहते है मै हूं दाता।मैं तुमको देने आया हुं।मनुष्य कहते है पतित पावन आयो।आकर हमको पावन बनायो। बाप कहते है तुम बच्चे कितने वेसमझ बन पड़े हो।पहले तुम कितने समझदार थे।सतोप्रधान थे।अभी तो तमोप्रधान बन पड़े हो।तुम्हारी बुधि में भी अब आया है आगे थोड़ई समझते थे कि हम विश्व पर राज्य करेते थे।तुम विश्व के मालिक थे।फिर ज़रूर बनेगे।हिस्ट्री जागाफी रिपीट होगी।बाप ने समझाया है 5000 वर्ष पहले मै आया था तुमको स्वर्ग का मालिक बनाया था।फिर तुम 84 जन्मो की सीढ़ी उतरते हो। यह विस्तार कोई भी शास्त्र में नही है।शिव बाब ने कोई शास्त्र आद पढ़ा है क्या।उनको तो ज्ञान की अथार्टी कहा जाता है।वो लोग भी शास्त्र आद पढ़ कर शास्त्रो की अथार्टी बनते है।वो भी तो गाते है पतित पावन आयो।गंगा स्नान करने जाते है।फिर गशा मारते है कि पापात्माए स्नान कर पानी को पतित बना देते है।हम चरण डाल गंगा को पावन बना देते है।कितने झुठ बोलते।अब उन की सज़ा कौन देवे?

[illegible]

के लिए। उन्हो ने तो गृहस्थी मार्ग छोड़ दिया। भक्ति मार्ग को छोड़ दिया। सन्यासीयो को भक्ति मार्ग में आना ही नां है। वो है ही निवृति मार्ग वाले। उनको शास्त्र पढ़ने को भी हक नही है। उन्हो की जंगल में प्रवेश होती थी। अब तो तमोप्रधान बन गए है। बड़े2 महल बनाते रहते है। आगे तो स्त्रीयो से घृणा करते थे। अब तो माईया उसको गुरु बनाए उनके चरण धोकर पीती है। कितना अन्धेर है। अब उन्हो को सज़ा कौन देंगे? बाप कहते है मैं ही अच्छी रीत सज़ा दूगां। एक तरफ परमात्मा नाम रूप से न्यारा फिर खुद को ही कहते शिवोहम। उन्हो का तो नाम रूप सब है। कितना अन्धेर है। बाप बैठ समझाते है ऐसे भी नही कहते भक्ति करो। ज्ञान भी नां हो भक्ति भी नां करे तो दोनो जहान से चले जावे। तुम कहते हो जो बाप को नही जानते वो नास्तिक है। वो लोग कहते यह भक्ति नही करते इसलिए यह नास्तक है। मित्र सम्बन्धी बरादरी वाले सब कहेंगे यह तो नास्तिक बन गए है। नां शास्त्रो को मानते निगुरे है। उनको यह पता नही कि सदगति दाता कौन है। बाप समझाते है कि तुम मुझे बुलाते ही हो हे पतित पावन आयो। मैं तुमको पावन बनाता हूं। वो पवित बनाते है। बाप भी पतित पतित बनाते गुरु भी पतित बनाते टीचर नही। वो तो पढ़ाते है। यह बाप भी कहते है मै टीचर हूं। तुमको पढ़ाने लिए। ऐसे नही हम पर कृपा करो। मैं तो टीचर हूं। तुम कृपा आद क्या मागते हो। आशीर्वाद तो ले आए हो। आकर मां बाप की मिलकियत के मालिक बनो। और आर्शीवाद क्या करेंगे। बच्चा पैदा हुआ और बाप की मिलकियत का मालिक बना। बाप को कहते है क्या कृपा करें। यहां भी कृपा की बात नही। सिर्फ बाप को याद करना है। यह भी किसको पता नही है। कि बाबा बाबा बिन्दी है। अभी तुमको बाप ने बतलाया है। सभी कहते भी है परमपिता परमात्मा। गाड फादर। सुपरीम सोल। तो परम आत्मा ठहरे नां। वो है सुपरीम बाकी सब आत्माएं है नानसुपरीम। सुपरीम बाप आकर आपसमान बनाते है। और कुछ नही है। कोई की बुधि होगा क्या कि बेहद का बाप जो स्वर्ग का रचता है। वो आकर स्वर्ग का मालिक बनाते है। तुम अभी जानते हो। देखो कृष्ण के हाथ में स्वर्ग का गोला है। गर्भ से बच्चा जब बाहर निकलता है तब से आयु शुरु होती है 6 मास गर्भ में रहा वो भी गिनती करनी चाहिए। परन्तु वो गिनती नही है। श्री कृष्ण तो पूरे 84 जन्म लेते है। गर्भ से बाहर आया उस दिन से 84 जन्म गिने। लक्ष्मी नारायण को तो बड़ा होने में 20×25× 20-25 वर्ष लगे नां। तो वो 30-35 वर्ष 5000 वर्ष में से कम करना पड़े। कृष्ण तो गर्भ से बाहर निकला और पूरे 84 जन्म लिए। लक्ष्मी नारायण के लिए 25-30 वर्ष कम कहेंगे। शिव बाबा का तो तुम गिन नही सकते। शिव बाबा कब आया टाईम दे नही सकते। साक्षात्कार होते थे। मुसलमान लोग भी बगीचा आद देखते थे। यह नौधा भक्ति तो कोई ने नही की। घर बैठे ही आपेही ध्यान में जाते रहते थे। वो तो कितनी नौधा भक्ति करते थे। तो बाप बैठ सनमुख समझाते है बाबा दूर देश से आया है यह बच्चे जानते है। इसमें प्रवेश का हमको पढ़ाते है। फिर बाहर जाने से नशा कम हो जाता है। याद रहे तो खुशी का पारा भी चढ़ा रहे। और कर्मातीत अवस्था हो जाए। परन्तु उसमें अजुन टाईम चाहिए। जब कि बाप ही कर्मातीत नां बना है तो बच्चे कैसे बन सकते। सब से पहले मम्मा को अच्छा पोजीशन गया। कर्मातीत अवस्था को पा लिया। शरीर के दुख सब दुर हो गए। बाबा भी चाहिते क्यो ना वहां जाए सर्विस करें। मम्मा को तो बहुत अच्छी लिफ्ट मिल गई। इसमें तो दुख होने की बात ही नही। अब देखो श्री कृष्ण की आत्मा को अन्तिम जन्म में फुल ज्ञान है। फिर गर्भ से बाहर निकलेगे पाई का भी ज्ञान नही होगा। बाप आकर समझाते है कृष्ण ने कोई मुरली बजाई नही। वो तो ज्ञान से जानते नही। लक्ष्मी नारायण ही नही जानते तो वो फिर रिशी मुनी सन्यासी आद कैसे जानेगे। विश्व के मालिक (लक्ष्मी नारायण ने यह नही जाना तो यह फकीर(सन्यासी) लोग कैसे जानेगे। सागर में पिपल के पत्ते पर आया यह क्यि यह सब कहानीया है। जो बैठ लिखी है। गगां नदी में पैर डाला तो गंगा नीचे चली गई।

[illegible]

विचार करो मनुष्य क्या ना बाते बना सकते है। अब बाप समझाते है तुमको ई भी उल्टी सुलटी बातो पर कब विश्वास नां करना। शास्त्र आद कीतने मनुष्य पढ़ते है। बाप कहते है पढ़ा हुआ सब भूल जायो। इस देह को भी भूल जायो। तुम नगें आए थे। फिर यहां यह वस्त्र धारण कर पार्ट बजाया। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा पॉट बजाती है। भिन साम रूप देश चोला पहन का। अब बाप कहते है यह छी2 वस्त्र है। आत्मा और शरीर दोनो पतित है। आत्मा को ही शाम और सुन्दर कहा जात है। आत्मा प्युयर थी तो सुन्दर थी। फिर काम चिक्षा पर बैठने से काले बने है। अब फिर बाप ज्ञान चिक्षा पर बिठाते है। पतित पावन बाप कहते है मुझे याद करो तो यह खाद ही निकल जावेगी। आत्मा में ही खाद पड़ती है। अब देखो गवर्मेन्ट कहती है सोना नही पहनो। जो थोड़ा बहुत है वो भी लूटते रहते है। कलयुग अन्त में सोना बिलकुल नही है। और सतयुग आद में फिर सोने के महल बनावेगें। वन्डर है। यहां हीरो का देखो कितना मान है। वहों तो पथ्थरो मिसल होते है। मुसलमान भी यहां से लूट कर अपने मसजिदो आद में जाकर लगाते है। कितने हीरे जवाहर थे। अब तो बाप से ज्ञान रतनो की झोली भर रहे हो। लिखा हुआ है सागर भी रतनो की झोली भर ले आते है। सागर से भी जितना चाहिए उतना लो। खाड़ीया ही भरतु हो जाती है। तुमने सा० किया है कितनी अन्डर गुफाए रहती है। टनो के टन ले आते है। माया मच्छन्दर का भी खेल दिखते है। उसने देखा सोने की ईटे पड़ी है ले जाता हूं। नीचे आया तो कुछ था नही। वहां तो सोने की ईटो के महल बनावेगें। ऐसे2 ख्यालात आने चाहिए तो खुशी का पारा चढ़े। बाप का परिचय देना है। शिव बाबा 5000 वर्ष पहले भी आया था। यह किसको पता नही है। तुम जानते हो 5000 वर्ष पहले आए तुमको को राजयोग सिखाया था। कल्प2 तुमको ही सिखावेगें। जो2 आकर ब्रहमण बनेगे वो फिर देवता बनेगें। विराट रूप भी बनाते है। उसमें ब्रहमणो की चोटी गुम कर दी है। ब्रहमण बहुत उतम कुल गाया जाता है। वो है जिसमानी तुमहो रूहानी। तुम सच्चीर2 कथा सुनाते हो। यही सत्य नारायण की कथा अमर कथा है। तुमको अमर कथा सुनाए अमर बना रहे है। यह मृत्युलोक खतम होना है। शिव बाबा कहते हूं मैं तुमको लेने लिए आया हूं। कितनी ढेर आत्माऐ होगी। आत्मा जाती है कोई आवाज़ थोड़ई होता है। मखियो का झुंड जाता है तो आवाज़ कितना होता है। रानी के पिछाड़ी सब भागती है। कितनी आपस में एक्ता है। भ्रमरी का भी मिसाल यहां का है। तुम मनुष्य से देवता बना देती हो। पतितो को तुम ज्ञान की भू2 करती हो तो पावन विश्व का मालिक बन जाति हो। तुम्हारा है प्रवृति मार्ग। उसमें भी मैजारटी मातायो की है। इसलिए वन्दे मात्रम कहा जातहै। ब्रहमा कुमारी वो जो 21 जन्म का वर्सा दिलाती है बाप दुवारा। बाप सदां सुख का वर्सा देते है। जो सर्विस करेगे लिखेगे पढ़ेगे होगे नवाब .... राज बनना अच्छा वा नौकर बनना अच्छा। पिछाड़ी के समय तुमको सब मालूम पड़ जावेगा हम क्या बनेगे। फिर पछतावेगे हम श्री मत पर क्यो ना चले। बाप कहते है फालो करो। ऐसे भी नही कोई एक कमरा दे देते है। सेन्टर के लिए खुद मीट आद खाते रहते हो वो पुन्नात्मा वो पापात्मा। फिर आश्रम नां रहे गा। घर में स्वर्ग बनाते है तो खुद भी स्वर्ग मे होना चाहिए नां। सिर्फ आर्शीवाद पर नही ठहरना है। बाप को याद करना है। वो है सपरीम बाप। सुपरीम बना कर ही साथ ले जावेगे। तुमको तो बहुत खुशी रहनी चाहिए। कितनी भारी लाटरी मिलती है। बाप को जितना याद करेगे उतना विकर्म विनाश होगे। बाप जितना प्यार दुनिया में कोई कर नही सकता। उनको कहा जाता है प्यार का सागर। तुम भी ऐसे बनो। अगर किसको दुख दिया रंज किया तो रंज हो कर मरेगे। यह कोई बाबा सराप नही देते है। समझाते है सुख दो तो सुखी होगे। सब को प्यार करो। बाबा भी प्यार का सागर है। अच्छा मा तपिता बाप दादा का मीठे2 सिकिलधे बच्चो प्रित याद प्यार गुड मार्निंग। ओम।